शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 दिसम्बर 2014
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

उपेन्द्रनाथ अश्क के नाट्य-साहित्य में मध्यवर्गीय नारी

तरूणा यादव
शोधार्थी (हिन्दी)
वनस्थली विद्यापीठ
राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

भारत में नाट्य साहित्य सबसे प्राचीन विधा है। इसे पंचम वेद की उपाधि भी मिली हुई है। प्राचीन काल से लेकर आज तक नाटक लोकप्रिय हैं। इसका मुख्य कारण यही है कि इसमें साहित्य के सभी अंगों का समावेश होता है। हिंदी गद्य के विकास के साथ नाट्य साहित्य का विकास हुआ है। आधुनिक काल में समाज सुधारकों ने महिला उत्थान के लिए अनेक कार्य किये। साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से महिला समस्या का चित्रण किया। कथाकार के रूप में ख्यात उपेन्द्रनाथ अश्क ने अपने नाट्य साहित्य में मध्य वर्गीय नारी का विविध रूपों में चित्रण किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी की पड़ताल की गयी है।

प्रस्तावना

भारत में नारी की स्थिति विभिन्न कालों और समाज में भिन्न-भिन्न प्रकार की है। वैदिक काल में उसे शक्ति एवं ज्ञान के प्रतीक के रूप में माना जाता था। 'अथर्ववेद' में कहा गया है कि - ''हे नव वधू! तू जिस घर में जा रही है, वहाँ की साम्राज्ञी है। तेरे सास, ससुर, देवर तथा अन्य व्यक्ति तुझे साम्राज्ञी मानते हुए तेरे शासन में आनंदित होंगे।''

भारतीय पौराणिक संदर्भों में स्त्री को देवी का स्थान प्राप्त था। प्राचीनकाल में महिलाओं के लिए प्रचलित था- ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते तत्र रमन्ते देवता।'' चूँकि महिलाएँ शारीरिक रूप में पुरुषों से कमजोर होती है, यह एक प्राकृतिक नियम है अतः इसी प्रकृति के आधार पर हमारे यहाँ एक अवधारणा निरूपित की गई कि :

''पिता रक्षति कौमारे भर्तारक्षति यौवने
स्थविरे पुत्राः नस्त्री स्वातंत्रयमर्हति''

अर्थात् कुमारी अवस्था में पिता रक्षा करता है, यौवन में पति, वृद्धावस्था में पुत्र, स्त्री कभी स्वतन्त्र नहीं रहती।'' कहने का अभिप्राय यह है कि वैदिक काल में महिलाओं को जो गौरवमय स्थान प्राप्त था, कालान्तर में उसका ह्रास होने लगा। महिलाओं के अधिकारों को सीमित कर दिया गया।

आधुनिक काल में शिक्षा के प्रभाव के कारण मध्यवर्गीय नारी अपने अधिकारों के प्रति सचेत हुई। शिक्षा का प्रभाव नारी के दाम्पत्य जीवन, व्यक्तित्व तथा स्वतन्त्रता पर भी पड़ा। नारी की परिवर्तित मानसिकता एवम् आर्थिक स्वतन्त्रता ने मध्यवर्ग को सर्वाधिक प्रभावित किया। मध्यवर्गीय नारी अपने विभिन्न रूपों में अपनी भूमिका का निर्वाह करती आई है।

उपेन्द्रनाथ अश्क ने अपने नाट्य-साहित्य में मध्यवर्गीय नारी को विभिन्न रूपों में प्रस्तुत किया है। मध्यवर्गीय नारी अपने परिवार, बच्चों और पति के लिए हमेशा तत्पर दिखाई देती है। भारतीय

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 दिसम्बर 2014
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

समाज में स्त्री का समर्पित पत्नी और वात्सल्यमयी माँ के रूप में सर्वाधिक महत्व है। मध्यवर्गीय नारी को अपने बच्चों के लालन-पालन, शिक्षा, नौकरी, विवाह आदि कार्यों की सबसे अधिक चिन्ता रहती है। वह अपनी सुख-सुविधा छोड़कर अभाव सहकर भी अपने बच्चों को सुखी देखना चाहती है। मध्यवर्गीय माँ अपनी संतान को शिष्ट, सभ्य बनाकर उसे सामाजिक प्राणी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वह चाहती है कि उसकी संतान जीवन में उन्नति के पथ पर हमेशा अग्रसर होती रहे।

अश्क के नाटक और मध्य वर्गीय नारी

'अश्क' के 'अंजो दादी' नाटक में ओमी अपने पति से कहती है- ''आपका ख्याल है कि नीलम बड़ा होकर कलक्टर बनेगा तो अशिष्ट, असभ्य और लोफर होगा? आप विश्वास रखिए वह एक भला, दयानतदार, सभ्य, शिष्ट और विनम्र हाकिम बनेगा। मैं हमेशा इस बात की शिक्षा उसे देती हूँ।'' इससे मध्यवर्गीय माँ की अपनी संतान के बारे में उसकी महत्वकांक्षाओं का पता चलता है।

भारतीय समाज में सम्पूर्ण पारिवारिक व्यवस्था की आधारभूत इकाई पत्नी है। प्राचीन काल से ही भारतीय नारी अपने पत्नी रूप की गरिमा का वहन करती आयी है। मध्यवर्गीय परिवारों में स्त्री अपने संस्कारों को अभी तक नहीं भूली है। मध्यवर्गीय परिवारों में पति किसी न किसी बात पर पत्नी को कष्ट देते है। परन्तु मध्यवर्गीय परम्परागत पत्नी इन कष्टों का विरोध नहीं करती। बसन्तलाल, पत्नी द्वारा जुएँ के रूपये न देने पर उसे जलती हुई लालटेन दे मारता हैं। लेकिन वह यही कहती है- ''अब तो यही अभिलाषा है कि आपके चरणों में संसार छोड़ दूँ।'' मध्यवर्गीय परिवारों में पति का पर स्त्री से सम्बन्ध और सास के द्वारा अत्याचार किये जाने के बावजूद भी परम्परागत नारी अपने पति के चरणों की धूल को माथे पर लगाना चाहती है। ''ईश्वर करे, अगले जन्म में फिर तुम्हारी दासी बनूँ और तुम्हारी सेवा करते-करते प्राण दूं।'' बहू (छाया) सास के द्वारा प्रताड़ित है, परन्तु फिर भी यही कहती है- ''माँ, मेरे सब दोष क्षमा कर देना। मैंने तुम्हें बहुत दुख दिया है।''

मध्यवर्गीय परिवारों में नारी एक बार जिसे वरण कर लेती है आजीवन उसी के प्रति समर्पित रहती है। विषम से विषम परिस्थितियाँ उसे अपने कर्तव्यों से विचलित नहीं कर सकती। पति की उपेक्षा के बावजूद भी उसकी सेवा में तत्पर रहना चाहती है। राज अपने पति की अपेक्षा के बावजूद भी उसकी सेवा करना चाहती है।

''वह दोपहर को देर से घर लौटता है। और लंच भी कालेज में मँगा लेता है। इस घृणा के बाद भी राज प्यार से उसके घावों को भर देना चाहती है।'' मध्यवर्गीय पत्नी पति की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं के अनुरूप स्वयं को ढ़ालकर अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाने के लिए हमेशा तैयार रहती है। मध्यवर्गीय नारी परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल लेती है।

'उपेन्द्रनाथ अश्क' ने नाट्य-साहित्य में जहाँ परम्परागत नारी के स्वरूप को स्पष्ट किया है वहीं मध्यवर्गीय नारी का परिवर्तित दृष्टिकोण भी सामने आया है। पूर्व युग की नारी जिसका प्रत्येक अंग मोम का था। जिसके सोचने, समझने का एक निश्चित ढाँचा था और जिसका आदि और अंत घर की चार दिवारी था। लेकिन वही मोम की गुडिया इस आधुनिक युग में न केवल अपने अधिकारों के प्रति सजग है बल्कि पुरूष से कंधे से कंधा मिलाकर प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। मध्यवर्गीय परिवारों में नारी को विषम परिस्थितियों के कारण नौकरी करनी पड़ती है और परिवार के आर्थिक संघर्ष में सहयोग देती है। शीला का पति जवानी में ही मर गया था। तब उसने आपको

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 दिसम्बर 2014
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

आर्थिक रूप से स्वावलम्बी बनाया। ''पति उनका जवानी में मर गया था। और कोई था नहीं। नये सिरे से पढ़ाई की। रात-भर सिलाई की। ट्रेनिंग ली। तब जाकर प्रायमरी स्कूल की अध्यापकी मिली। फिर अपने छोटे भाई और अपनी बेटी को पढ़ाया-लिखाया।'' राज भी अपने पति को छोड़कर अपने आपको आर्थिक रूप से स्वावलम्बी बनाने के लिए अपने मायके को भी छोड़ देती है। मध्यवर्गीय नारी प्राचीन रूढियों एवं मान्यताओं को त्यागकर आर्थिक रूप से स्वावलम्बी बनकर बेहतर जीवन जीना चाहती है। वह घर की चारदीवारी में अपने आपको बंद होते हुए नहीं देखना चाहती।

मध्वयवर्गीय पुरुष जो नारी को अपनी वासनाओं का खिलौना समझता है। पुरूष जो उसे देवी के आसन पर बैठाना चाहता है, पुरुष जो उसे सम्पत्ति समझता है, वही अपराजित (माया) एक स्वस्थ समाधान की खोज में निकल जाती है। माया, मदन से कहती है- ''(बंदूक को झटके के साथ मदन के हाथ से छिनते हुए, होठों को और भी विकृत करके) मतबल? तुम मुझसे प्रेम नहीं करते। जाओ! तुम अपने रास्ते चले जाओ! इस बरबस शिकारी से मैं स्वयं निपट लूंगी।'' ''मैं देवी भी नहीं जो केवल अपने आसन पर बैठे रहे, तुम एक दासी, खिलौना, या देवी चाहते हो, संगिनी की तुम में से किसी को भी जरूरत नहीं।'' रानी भी माया की ही पूरक है। रानी दहेज के कारण ससुराल से अपने पिता के घर आ जाती है।

रानी भी दहेज की मानसिक यन्त्रणा से छुटकारा पाना चाहती है। 'स्वर्ग की झलक' नाटक में भी भाई साहब नारी के बदलते हुए दृष्टिकोण के बारे में अपनी पत्नी से कहते हैं- ''शायद तुम आज की नारी को नहीं जानती। पहले जरूर स्त्रियाँ अपने आपको पुरूष के अनुसार ढाल लिया करती थी पर अब तो पुरूष ही अपने आपको ढालते है।''

निष्कर्ष

अतः इस प्रकार कहा जा सकता है कि 'उपेन्द्रनाथ अश्क' के मन में नारी के प्रति असीम श्रद्धा और अगाध वेदना है। उन्होंने अपने नाट्य-साहित्य में मध्यवर्गीय नारी को विभिन्न रूपों में प्रस्तुत किया है। जहाँ मध्यवर्गीय स्त्री पति को परमेश्वर के रूप में देखती है वही दूसरी तरफ शिक्षित मध्यवर्गीय नारी अपने प्रति सामंतवादी सोच के विरूद्ध संघर्ष की ओर प्रेरित हुई।

सन्दर्भ-सूची

1 डॉ.मोहम्मद अजहर ढ़ेरीवाल, हिन्दी के उपन्यासों में नारी के विविधूपों का चित्रण, पृ. सं. 42
2 वही, पृ. सं. 42
3 उपेन्द्रनाथ अश्कः अंजो दीदी नाटक, पृ. सं. 81
4 वही, छठा बेटा नाटक, पृ. सं. 46
5 वही, पृ. सं. 46
6 वही, तूफान से पहले एकांकी संग्रह (पापी एकांकी), पृ. सं. 76
7 वही, अलग-अलग रास्ते नाटक, पृ. सं. 76
8 वही, बड़े खिलाड़ी नाटक, पृ. सं. 45
9 वही, कैद और उड़ान नाटक, पृ. सं. 151
10 वही, पृ. सं. 152-153
11 वही, स्वर्ग की झलक, पृ. सं. 15